❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ज्ञान ज्योति महोत्सव
महासम्पर्क अभियान
महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती के अवसर पर न्यूनतम 200 महानुभावों से संपर्क करने का संकल्प लीजिए
अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड करें

वर्ष 47, अंक 29 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 3 जून, 2024 से रविवार 9 जून, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्यसमाज की सेवा ईकाई - अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में देशभर के वनवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का

10 दिवसीय वैचारिक क्रान्ति शिविर समापन एवं दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

देशभर से सैकडों वनवासी युवक-युवतियों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार प्रसार का संकल्प

आर्यसमाज के अधिकारी, आर्य नेताओं, राजनेताओं और वैदिक विद्वानों ने दिया वनवासी युवा शक्ति को आशीर्वाद और शुभकामनाएं

भारत के स्वाभिमान को जागृत रखेगी आर्य समाज की युवा शक्ति - सुरेन्द्र कुमार आर्य, अध्यक्ष, जे.बी.एम.

हथियारों से नहीं विचारों से आएगी मानव समाज में क्रान्ति -सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

वैदिक धर्म को अपनाने से होगा व्यक्ति और विश्व का कल्याण - प्रकाश आर्य, प्रधान, मध्य भारतीय सभा

वनवासी अंचल के युवाओं में रचनात्मक शक्ति का अभ्युदय है वैचारिक क्रान्ति - धर्मपाल आर्य, प्रधान

आर्य समाज के मूल सिद्धांत और नियमों के अनुसार प्रत्येक मनुष्य एक ईश्वर की संतान है। अतः सबकी उन्नति प्रगति का एक ही संविधान वेद है। वैदिक ज्ञानधारा के अनुसार मानव मात्र जीवन-यापन करे, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को अपनाए, अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य, उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करे, इसके लिए आर्य समाज निरंतर जन जाग्रति के लिए वैचारिक क्रांति की लहर चलाता आ रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ पिछले 5 दशकों से देश के उन हिस्सों में जहां आज विश्व की पांचवीं अर्थ व्यवस्था होने के बावजूद और 21वीं शताब्दी की ओर अग्रसर भारत में वहां के वनवासी भाई-बहन जीवन की मूलभूत सुविधाओं के अभाव में, शिक्षा संस्कारों के बिना जंगली जीवन जीने को मजबूर थे, ऐसे सूदूर क्षेत्रों में जिसे तथाकथित शिक्षित लोग आदिवासी क्षेत्र कहते हैं, वहां गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, स्कूल, छात्रावासों के अलावा स्किल डेवलपमेंट के कार्यक्रम चलाकर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अहम भूमिका निभाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

मानव निर्माण के इस सेवा अभियान में संलग्न अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ पिछले 40 वर्षों से गर्मी की छुट्टियों में वैचारिक क्रांति शिविरों के माध्यम से वनवासी अंचलों से युवक-युवतियों को दिल्ली में आमंत्रित करके, उनके भोजन, आवास, भ्रमण सहित संपूर्ण व्यवस्था के साथ उन्हें वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों, सहित संध्या, हवन, भजन, प्रार्थना, उत्तम दिनचर्या आदि की संपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। जिसके परिणाम स्वरूप फिर यही बच्चे भारत के वनवासी

- शेष समाचार एवं चित्रमय झांकी पृष्ठ 4-5 पर

41वें वैचारिक क्रान्ति शिविर के दीक्षान्त समारोह में तीनों वर्गों के विजेता बच्चों को प्रमाण पत्र प्रदान करके सम्मानित अधिकारी एवं अतिथिगण सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, सुरेशचन्द्र आर्य, धर्मपाल आर्य, सत्यानन्द आर्य, प्रकाश आर्य, रवीन्द्र शर्मा, धर्मपाल गुप्ता, विनय आर्य, योगराज अरोड़ा, सुदर्शन भगत, जीववर्धन शास्त्री, दीपक केड़िया, रवीन्द्र शर्मा, श्रीमती विमलेश बंसल, श्रीमती रचना आहूजा एवं श्रीमती खट्टर।

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत

विशाल चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा प्रशिक्षण समापन समारोह

रविवार 9 जून, 2024 सायं : 4:30 बजे

स्थान : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के

राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का समापन एवं दीक्षान्त समारोह

रविवार 16 जून , 2024 सायं: 4:00

स्थान : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद (हरियाणा)

आर्यजन उपरोक्त दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्य वीर-वीरांगनाओं का उत्साहवर्धन कर आशीर्वाद प्रदान करें।

आर्यसमाज की युवा ईकाई - आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग नई दिल्ली में

चरित्र निर्माण, आत्म रक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

समारोह की विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी आगामी अंकों में प्रकाशित की जाएगी - सम्पादक

देववाणी-संस्कृत

षड्रिपुदमनकर्त्ता इन्द्र

वेद-स्वाध्याय

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।। - अथर्व. 8/4/22
ऋषिः **चातनः।।** देवता - **मन्त्रोक्ता।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

शब्दार्थ - कामः -(हे जीव) **उलूकयातुम्** = उल्लू के समान आचरण (मोह) को **शुशुलूकयातुम्** =भेड़िये के चलन (क्रोध) को **श्वयातुम्** = कुत्ते -जैसे व्यवहार (मत्सर) को **उत** = और **कोकयातुम्** = चिड़िया के आचरण (काम) को **जहि** = नष्ट कर दे। **सुपर्णयातुम्** = बाज़ की चाल (मद) को **उत** = तथा **गृध्रयातुम्** = गिद्ध-जैसे बर्ताव (लोभ) को भी **रक्षः** = इन छहों में से एक-एक राक्षक को **इन्द्र** = हे आत्मन्! तू **दृषदा इव प्रमृण** = अपनी दारणशक्ति द्वारा इस तरह विनष्ट कर दे जैसे शिला से मिट्टी का ढेला या मिट्टी का बर्तन फूट जाता है।

विनय- हे जीव! तूने दुर्लभ मनुष्य-जन्म को पाकर भी अभी तक अपने में से पशुताओं को नहीं निकाला हैं तुझ में छह प्रकार के पशुत्व अबतक बसे हुए हैं। मनुष्य-योनि ही वह उच्च योनि है जिसमें आत्मशक्ति जाग्रत की जा सकती है, अतः तू अब अपने इन्द्रत्व को पहचान और अपनी आत्मशक्ति से इन 'षड्रिपुओं' को, छह राक्षसों को, अपने में से विनष्ट कर दे। इनसे अपनी रक्षा करनी चाहिए, अतः ये ही तो असली राक्षस हैं जो तेरे वध्य हैं तुझ में कभी-कभी जो कोकपक्षी की भांति भयंकर कामविकार का राक्षस आता है, उसे तू मार डाल। तू तो संयम कर सकने वाला मनुष्य है। तू तो कभी क्रोधाविष्ट होकर अपने भाइयों पर निर्दय अत्याचार कर डालता है, यह तुझमें भेड़ियापन है। जो भी कुछ द्वेष व हिंसा तू करता है वह सब तुझ मनुष्य में जीवों को मारकर खा डालनेवाले भेड़िए का-सा आचरण है और जिस प्रकार गिद्ध मरते-सिसकते प्राणियों के मांस पर ही दृष्टि रखता है, उसी प्रकार तुझ में दूसरों के नाश पर पुष्ट होने की जो घृणित, लोभमयी वृत्ति उठती है यह भी एक बड़ा दुष्ट राक्षस है; तू इसे भी नष्ट कर दे। एवं, तू उल्लू के आचरण को भी छोड़ दे। जैसे उल्लू को प्रकाश से घृणा होती है उसी प्रकार जो तुझमें तमोमयावस्था में पड़े रहने की प्रवृत्ति और सात्त्विक भाव तथा ज्ञानप्रकाश की चर्चा देखता है, वहां से तू दूर भागा करता है- यह जो प्रवृत्ति है, इसे तू त्याग दे। इसी तरह अहंकार बड़ा बुरा राक्षस है, बाज़ (गरुड़) के समान गर्व= घमण्ड के भाव को भी अब तुझे सर्वथा निकाल देना होगा और तू अब कुत्तापन कब तक करता रहेगा। कुत्तों की तरह आपस में लड़ना और पराये के सामने दुम हिलाना, या जैसे कुत्ता अपने वमन किये को भी चाट लेता है वैसे व्रत करके त्यागी हुई वस्तु को भी फिर ग्रहण कर लेना, इस प्रकार की पशुताएं तू कब तक करता रहेगा? तू तो इन्द्र = आत्मा है, तेरी आत्म-शक्ति के सामने ये विकार कैसे ठहर सकते हैं? जैसे दृषत् अर्थात् शिला पर टकराकर मिट्टी का ढेला चूर-चूर हो जाता है वैसे ही, हे आत्मन्, हे इन्द्र! तेरी भी एक 'मही दृषत्' दारणशक्ति है, तू इसे पहचान!

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सोशल मीडिया का सदुपयोग/दुरुपयोग

सोशल मीडिया शोर्ट रील क्यों दे रही है जातिवाद को बढ़ावा

रील बनाने का जुनून और रील देखने का नशा युवाओं को नई तरह की बीमारी का सोशल एडिक्ट बना रहा है। रील बनाने की सनक जहाँ एक ओर हादसों को भी जन्म दे रही है वहीं सामाजिक स्तर पर जातीय उन्माद, जातीय गर्व और जातीय हीनता को बढ़ावा भी दिया जा रहा है। ये कौन लोग हैं जो ऐसा काम कर रहे हैं? कोई पीछे से उकसा रहा है या फिर स्वतः ही यूजर्स ऐसा कर रहे हैं? यह सवाल आज हमारे सामने है क्योंकि ऐसा करके समाज में एक किस्म से भयंकर जहर घोला जा रहा है जिससे सामाजिक कटुता बढ़ रही है।

शुक्र है कि सोशल मीडिया का सरकारीकरण नहीं हुआ है। वेब दुनिया की रिपोर्ट बताती है कि अगर सोशल मीडिया सरकारी होता तो कुछ नेता अवश्य मांग करते कि फेसबुक, ट्विटर, लिंक्डइन आदि में आरक्षण किया जाए। ऐसी व्यवस्था हो कि निश्चित प्रतिशत लाइक आरक्षित कोटे के हो ही। यह भी होता कि अकाउंट शुरू करने के पहले किसी राजपत्रित अधिकारी से प्रमाणित प्रमाण-पत्र की प्रतिलिपि नत्थी करनी पड़ती कि आप किस जाति के हो। भारतीय लोग हैं जो सोशल मीडिया पर उपनाम के बहाने जाति की घोषणा कर ही देते हैं। त्रिपाठी, चतुर्वेदी, शर्मा, मिश्रा, जोशी, श्रीवास्तव, यादव, सिंह, वर्मा, परमार, अग्रवाल, कुमार, जैन, ठाकुर, चौहान आदि। इसके बाद भी कुछ लोग अपने नाम के पहले पंडित, कुंवर, ठाकुर आदि लिखते हैं। सोशल मीडिया पर अभी ऐसा कोई नियम नहीं है कि कमेंट या लाइक करने का कोई आधार जाति को माना जाए। इसके बावजूद कई लोग हैं, जो सोशल मीडिया पर जातिवाद फैलाते हैं।

आप सोशल मीडिया के कई प्लेटफार्म पर कोई दस-बारह सैकेंड का विडियो स्क्रोल कर रहे होंगे कि अचानक आपके सामने एक विडियो आएगा। जिसमें ठांय-ठांय यानि गोली चलने की आवाज़ आएगी। रील बनाने वाले के हाथ में आसमान की ओर मुंह की हुई राइफल है और उंगली ट्रिगर पर होगी। पीछे से आवाज़ आती है, "कौन हो तुम", फिर जवाब आता है, "हम ब्राह्मण हैं". और पीछे से दो गोलियां चलने की आवाज़ आती है।

मोबाइल को स्क्रोल करेंगे तो दूसरी कोई रील्स सामने आएगी जिसमें बीस-इक्कीस वर्ष का कोई युवा दिखाई देगा। सिर पर साफा होगा, पीछे से बैकग्राउंड से आवाज आएगी कि ठाकुर हैं हम बेटा, जरा बचके हर फिल्ड में आगे पावेगा ठाकुर का छोरा। आप स्क्रोल कर रहे होंगे, फिर कोई गाड़ी का काफिला दिखेगा या कोई उन्नीस-बीस वर्ष का लड़का हुक्का लिए गाड़ी के आस-पास खड़ा होगा। लिखा होगा- रोला चौधर का चौधर जाट की। फिर कोई गुज्जर कोई कुछ यानि एक आज एक यूथ अपनी जातीय पहचान को लेकर रील्स बना रहा है। केवल इतना ही नहीं भीमाची शेरनी, यानी भीमराव अंबेडकर की शेरनी मिलेगी। कोई खुद की जाति बताकर दूसरे की जाति पर कटाक्ष या व्यंग कर रहा होगा। ऐसे लोगों के लाखों की संख्या में फर्सॅलोवर्स मिलेंगे, लाइक और कमेन्ट भी मिलेंगे।

ये सोशल मीडिया की दुनिया है। जहाँ ऐसी रील्स आम मानी जाती है। वो शुक्र है कि सोशल मीडिया का सरकारीकरण नहीं हुआ है। वेब दुनिया की रिपोर्ट बताती है कि अगर सोशल मीडिया सरकारी होता तो कुछ नेता अवश्य मांग करते कि फेसबुक, ट्विटर, लिंक्डइन आदि में आरक्षण किया जाए। ऐसी व्यवस्था हो कि निश्चित प्रतिशत लाइक आरक्षित कोटे के हो ही। यह भी होता कि अकाउंट शुरू करने के पहले किसी राजपत्रित अधिकारी से प्रमाणित प्रमाण-पत्र की प्रतिलिपि नत्थी करनी पड़ती कि आप किस जाति के हो। भारतीय लोग हैं जो सोशल मीडिया पर उपनाम के बहाने जाति की घोषणा कर ही देते हैं। त्रिपाठी, चतुर्वेदी, शर्मा, मिश्रा, जोशी, श्रीवास्तव, यादव, सिंह, वर्मा, परमार, अग्रवाल, कुमार, जैन, ठाकुर, चौहान आदि। इसके बाद भी कुछ लोग अपने नाम के पहले पंडित, कुंवर, ठाकुर आदि लिखते हैं। सोशल मीडिया पर अभी ऐसा कोई नियम नहीं है कि कमेंट या लाइक करने का कोई आधार जाति को माना जाए। इसके बावजूद कई लोग हैं, जो सोशल मीडिया पर जातिवाद फैलाते हैं।

दरअसल ऐसा करने वाले लोग दो किस्म के हैं। पहले तो वे जो अपनी जाति का प्रचार और उसे महिमामंडित करते हैं। दूसरे वे हैं जो अपनी जाति का प्रचार तो नहीं करते, लेकिन हमेशा दूसरी जाति वालों को धमकाते रहते हैं। इन लोगों को लगता है कि सारे पिछड़ेपन का कारण जातिवाद और केवल जातिवाद ही है।

सोशल मीडिया के एक मर्मज्ञ ने तो इस बात पर गहरी रिसर्च कर डाली कि किस जाति के लोगों के मित्रों की सूची में कौन-कौन सी जाति के लोग मुख्य हैं। उन्होंने यह पाया कि आमतौर पर लोग अपनी जाति के लोगों से ही सोशल मीडिया पर भी घिरे रहते हैं। इसके बहुत से सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक कारण हो सकते हैं। इन कारणों की भी उन्होंने विस्तृत व्याख्या की। सोशल मीडिया पर एक और जाति विचारधारा वाली है। कुछ लोग इसे भक्तवादी विचारधारा भी कहते हैं। कार्ल मार्क्स, राममनोहर लोहिया, गांधी, ओशो, आम्बेडकर या अपनी जाति किसी भी महापुरुष के प्रशंसक कई बार भक्त का रूप धरकर सोशल मीडिया पर सक्रिय हो जाते हैं। ऐसे लोगों से तर्क-वितर्क नहीं किया जा सकता। ये केवल अपनी ही बात कहते हैं। इनका सारा चाल-चलन एकतरफा और बदजुबानी से भरा होता है। यह बदजुबानी इस तरह हावी है कि अनेक बुद्धिजीवी यहां खुद को अनुपस्थित दर्शा देते हैं।

इन इंफ्लुएंसर्स की रील्स देश में खिंची हुई धार्मिक और जातीय रेखाओं को उकेरती हैं। सोशल मीडिया पर जाति का दिखावा सहित कई चिन्ताएं भी दिख रही हैं। राजस्थान से चलने वाले एक इंस्टाग्राम अकाउंट पर हजारों फॉलोअर्स हैं। वह आए दिन बंदूक लहराते हुए सोशल मीडिया पर अपने रील्स अपलोड करते हैं। रील्स के बैकग्राउंड में बॉलीवुड फिल्मों के डायलॉग के साथ उसे एक खास जाति के नायक के रूप में पेश करती है। वह अपने समुदाय में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए हर दूसरे पोस्ट में अपनी जाति को बताना नहीं भूलता है।

- जारी पृष्ठ 7 पर

महर्षि की 200वीं जयन्ती पर आर्यसमाज द्वारा राष्ट्रहित में उठाए गए मुद्दों की श्रृंखला में **5**

देश, धर्म, संस्कृति और संस्कारों को लेकर उत्पन्न हुई चुनौतियों का चिन्तन

मैं क्या खा सकता हूँ?

एक बहुत पुरानी उक्ति है— 'जैसा खाए अन्न, वैसा होवे मन'। यह केवल एक उक्ति या कहावत नहीं है बल्कि इसे लिखने के पीछे एक बहुत बड़ा विज्ञान, एक लॉजिक काम कर रहा है। वास्तव में भोजन हमारे शरीर का ईंधन है, जैसा ईंधन डालेंगे वैसा ही चलेगा। यानि जो वाहन जिस ईंधन से चलने के लिए डिजाइन किया गया है अगर इसके विपरीत वाहन में दूसरा ईंधन डालेंगे तो गाड़ी देर-सबेर खराब हो जाएगी, मसलन, पेट्रोल की गाड़ी पेट्रोल से चलती है और डीजल की गाड़ी डीजल से। ठीक ऐसे ही हमारा शरीर भी है।

अब मन की बात करें तो एक प्रसंग से समझा जा सकता है एक बार महर्षि दयानन्द सरस्वती के सामने प्रश्न आया कि ''पशु को मारना तो ठीक नहीं परन्तु मरे हुए पशु का मांस खाने में क्या दोष है?''

इसका उत्तर देते हुए दयानन्द सरस्वती जी ने कहा—''जैसा दोष उपकार करने वाले माता-पिता आदि के वृद्ध अवस्था में उन्हें मारने और उनके मांस खाने में है, वैसे ही उन पशुओं की सेवा न कर मार के खाने में है और जो मरे पश्चात् उनका मांस खावे तो उसका स्वभाव मांसहारी होने से अवश्य हिंसक होके हिंसा रूपी पाप से कभी बच नहीं पायेगा, इस कारण किसी भी अवस्था में मांस नहीं खाना चाहिए।''

इसका स्पष्ट अर्थ है कि स्वच्छ अन्न के स्थान पर मांस आदि दुर्गन्ध वाले पदार्थ खाने से मन वैसा ही मलिन हो जाता है। हैरानी की बात है कि सब्जी थोड़ी सी खराब हो जाये तो भी हम उसे हटा देते हैं तो फिर पूरे तौर पर सड़ा हुआ मांस कैसे खाने योग्य हुआ?

तुम्हारे शरीर को जिस ईश्वर ने बनाया क्या उसी ने पशु आदि के शरीर नहीं बनाये जो तुम कहो कि पशु आदि हमारे खाने को बनाये तो हम कह सकते हैं कि हिंसक पशुओं के लिए उसने तुम्हें बनाया होगा? जैसे तुम्हारा चित्त उनके मांस पर चलता है वैसे ही शेर-चीते आदि का चित्त भी तुम्हारे मांस पर चलता है तो उनके लिए तुम क्यों नहीं? ये तो हुई महापुरुषों की बात, अब आज की करते हैं—

विनोद के घर में कोई भी सदस्य नॉनवेज भोजन नहीं लेता। थोड़े समय पहले तक विनोद भी पूर्ण शाकाहारी था लेकिन जब से जिम ज्वाइन किया तब से नॉनवेज भोजन उसकी डाइट का हिस्सा बन गया। ये केवल एक विनोद की कहानी नहीं है। आज-कल के समय में बहुत से लोग खुद को फिट रखने के लिए जिम जाना पसंद करते हैं। साथ ही जिम ट्रेनर की ओर से दी गई डाइट को फॉलो करते हैं। अधिकांश जिम ट्रेनर लोगों को चिकन, मटन आदि मांसाहारी भोजन की डाइट बताते हैं ताकि उनका शरीर आकर्षक दिखाई दे।

कुछ समय से टीवी विज्ञापन के माध्यम से नॉनवेज फूड को काफी परोसा जा रहा है। चाहें इसमें दीपावली पर नॉनवेज पिज्जा का विज्ञापन हो या बर्गर का। यानि आसानी के साथ ये बात लोगों के दिमाग में पहुंचाई जा रही है कि मांसाहार जीवन का हिस्सा है और जो कोई नॉनवेज नहीं खाता वह पिछड़ा हुआ है। कुछ लोग ये भी तर्क देते हैं की हम तो मारते नहीं, पाप तो मारने वाले पर है, पर हमारा प्राचीन संविधान मनुस्मृति देखिये क्या व्यवस्था दे रही है, देखें— 'मारने की आज्ञा देने, मांस के काटने, पशु आदि के मारने, उनको मारने के लिए लेने और बेचने, मांस को पकाने, परोसने और खाने वाले आदि सब पाप के भागी है।'

सत्य घटनाओं पर आधारित यह लेख पुस्तक में दिया गया क्यू. आर. कोड स्कैन करके स्वयं पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ाएं।
पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें : www.vedicprakashan.com

केवल जिम ही नहीं। कुछ समय से टीवी विज्ञापन के माध्यम से नॉनवेज फूड को काफी परोसा जा रहा है। चाहें इसमें दीपावली पर नॉनवेज पिज्जा का विज्ञापन हो या बर्गर का। यानि आसानी के साथ ये बात लोगों के दिमाग में पहुंचाई जा रही है कि मांसाहार जीवन का हिस्सा है और जो कोई नॉनवेज नहीं खाता वह पिछड़ा हुआ है। कुछ लोग ये भी तर्क देते हैं की हम तो मारते नहीं, पाप तो मारने वाले पर है, पर हमारा प्राचीन संविधान मनुस्मृति देखिये क्या व्यवस्था दे रही है, देखें—

''मारने की आज्ञा देने, मांस के काटने, पशु आदि के मारने, उनको मारने के लिए लेने और बेचने, मांस को पकाने, परोसने और खाने वाले आदि सब पाप के भागी है।''

ऐसे में एक प्रश्न हम सबके सामने खड़ा हो जाता है कि क्या यह सिर्फ कम्पनियों का बिजनेस है या आधुनिकता के नाम पर भारत के खान-पान के कल्चर को समाप्त करना? आप जो खाते हैं खाते रहिये, लेकिन एक बार सोचने की तो कोई मनाही नहीं है? क्योंकि अचानक पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न समाचार पोर्टल कुछेक विचारक इतिहासकार ऐसे सामने आये जो यह साबित करने पर तुले हैं कि वैदिक युग में लोग मांस-भक्षण करते थे। कई विचारक वेदों को हवाला देकर भी यही प्रूफ करने पर उतारू हैं कि वैदिक युग से लेकर अभी तक हिन्दू संस्कृति में मांस-भक्षण की कोई मनाही नहीं थी।

ऐसे में सवाल बन जाता है कि क्या हमारे पूर्वज मांसाहारी थे? वो मांस भक्षण किया करते थे या फिर अब आधुनिक समाज के दिमाग में यह बात डालकर लोगों का खान-पान उनकी सोच एवं संस्कृति बदले जाने का एजेंडा है? ये भी एक तथ्य है जब भारत विश्वगुरु कहलाता था, तब जब यहाँ के ज्ञान-विज्ञान का बोलबाला पूरे विश्व में था तब यहाँ के सभी निवासी पूर्ण शाकाहारी ही थे।

बड़े-बड़े न्यूज पोर्टल लिख रहे हैं कि हमारे पूर्वज बड़े पैमाने पर मध्य पाषाण कालीन (8,000-2,700 ईसा पूर्व) किफायती खाने की अवधारणा का पालन करते थे, जिसमें सब्जियां और मांस शामिल था। भारत में खाने की कुल खपत सीमित थी, साथ ही उपवास के भी अलग-अलग दिन थे। फिर बताया जाता है कि 500 ईसा पूर्व में जब जैन धर्म का उदय हुआ, तो इसके अनुयायी शाकाहारी हो गए। यह अमीरों और कुलीनों की पसंद थी, जो शाकाहार को अपनाकर किफायती खाना खा सकते थे।

जबकि देखा जाये तो दुनियाभर में बौद्ध आज भी मांस खाते हैं। लेकिन जब चीनी बौद्ध भिक्षु और विद्वान् ह्वेनत्सांग 630 ईस्वी में भारत आया तो वह जानकर चौंक गया कि भारतीय बौद्ध शाकाहारी थे। वे मठों में दिन में कई बार बड़े चाव से खाना खाते थे और दिनभर चावल का माढ़ पीते रहते थे।

इसके अतिरिक्त जब पश्चिम एशिया से मेसोपोटामिया के लोग सिंधु घाटी में हड़प्पा सभ्यता का दौरा करते थे, तब तला हुआ बैंगन खाते थे। साथ ही इसे अपने घर ले जाते थे और इसमें दही डालकर खाते थे। आज इसे ईरानी 'भुरानी बैंगन' कहा जाता है। मेसोपोटामिया के लोगों का चावल से परिचय भी शायद हड़प्पा के लोगों ने नहीं कराया था। क्योंकि इसके बाद ही मेसोपोटामिया में प्याज की खेती हुई। चावल में प्याज डालने का काम भी हड़प्पा सभ्यता से पहले हुआ। जमीन के जरिए जुड़े इन लोगों ने अपनी पहचान बनाए रखते हुए अपने व्यंजनों को एक-दूसरे से साझा किया।

किन्तु मध्यकाल आते-आते खान-पान में परिवर्तन होने लगा। इसका एक उदहारण आप ऐसे समझ सकते हैं कि मुगलकाल में अगर किसी का धर्म भ्रष्ट करना होता था तो उसे जबरन मांस खिलाया जाता था। आप इसी से समझिये कि भारतीय उपमहाद्वीप में 'शाकाहार' धर्म का ही एक अंग था। मांसहारी को दानव तथा शाकाहारी को 'मानव' कहे जाने की परम्परा रही थी।

लेकिन पिछले कुछ सालों के दौरान मांसाहार को प्रोत्साहन दिया गया। ये सब कोई अचानक हुई घटना नहीं है। दरअसल षड्यंत्र वही है कि लोगों को उनके मूल खान-पान से दूर कर दिया जाये तो अपने धर्म से स्वयं ही दूर हो जायेंगे। यानि जो काम मुगलकाल में जबरन हुआ उसे अब प्यार और एजेंडे के साथ किया जाये।

आपने देखा होगा थोड़े समय पहले हैदराबाद की एक संस्था नेशनल एग कोआर्डिनेशन ऑर्गेनाइजेशन ने एक भ्रम पैदा किया कि अंडे शाकाहारी होते हैं। यानि जो अंडे अभी तक सिर्फ अंडे थे जिसे शाकाहार की श्रेणी में नहीं रखा जा रहा था अब वो अचानक से आयुर्वेदिक हो गये। फिर एक और संस्थान सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुक्कुट अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र ने कहा कि उनके अंडे को आयुर्वेदिक इसलिए कहा जा रहा है, क्योंकि इस प्रक्रिया में मुर्गियों को जो आहार दिया जाता है, उसमें आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों का मिश्रण होता है। मसलन मुर्गियों को मुनक्का, किशमिश, बादाम और छुआरे आदि परोसे जा रहे हैं, तो उनसे पैदा होने वाले अंडे आयुर्वेदिक कहे जा रहे हैं।

हो सकता है कल कहा जाये कि काजू, मखाने, पिस्ता खाने वाली और शरबत पीने वाली गाय का बीफ भी आयुर्वेदिक है? क्योंकि जब बाजार पर पूंजीवाद हावी हो जाए तो आगे ऐसी खबरें लोगों के लिए सुनना और पढ़ना कोई नई बात नहीं रह जाएगी।

जबकि आयुर्वेद हमारे ऋषि-मुनियों और सन्तों का एक बहुत बड़ा विज्ञान है—ज्ञान है, जो हजारों वर्षों से हमारी संस्कृति की सेवा करता आ रहा है। ऐसे आयुर्वेद का मखौल उड़ाने वालों को कतई भाव नहीं दिया जाए, उनका भरपूर प्रतिवाद किया जाए। यह शब्द छल है और इस तरह के विज्ञापन पर भी प्रतिबंध लगाना चाहिए और पूरी तरह से भारत सरकार से इस बात का आग्रह करना चाहिए कि ऐसे लोगों के मंसूबों को कतई न पनपने दें, अन्यथा हमारी संस्कृति को बहुत नुकसान होगा।

अध्ययनकर्ताओं ने शाकाहारी और मांसाहारी लोगों के बीच किए गए तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि मांसाहारी

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए अ.भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी

स्वागत एवं सम्मान : दीक्षान्त के अवसर सर्वश्री सुरेशन्द्र आर्य जी, सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, सुदर्शन भगत जी, दीपक केडिया जी, रवीन्द्र शर्मा, योगराज अरोड़ा, अमरीक सिंह जी, धर्मपाल आर्य जी एवं प्रकाश आर्य जी का स्वागत एवं सम्मान करते हुए संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी एवं महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी।

शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त एवं दिल्ली में रहकर शिक्षा प्राप्त कर रहे युवक-युवतियों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम

क्षेत्रों में दूसरे बच्चों को संस्कारित करते हैं, और इस तरह से एक ऐसी वैचारिक क्रांति की लहर चल रही है जिससे समाज का हर वर्ग लाभान्वित होकर देश का सभ्य नागरिक और राष्ट्र भक्त बन रहा है।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष 41वां वैचारिक क्रांति शिविर 24 मई से 2 जून 2024 के बीच दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा आर्य समाज रानी बाग में आयोजित किया गया। जिसमें भारत के वनवासी राज्यों से सैकडों आर्य युवक-युवतियों ने भाग लिया, 24 मई को शिविर का विधिवत उद्घाटन हुआ, जिसमें दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य जी सहित आर्य समाज का शीर्ष नेतृत्व, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा के अधिकारियों ने बच्चों को आशीर्वाद दिया।

इस शिविर में सहभागी सभी आर्य कार्यकर्ता बच्चों की आदर्श दिनचर्या, योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, संध्या, हवन, बौद्धिक , शास्त्र परिचय, राष्ट्र भक्ति, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की शिक्षा के साथ भजन, संगीत आदि की कक्षाएं नियमित रूप से चलाईं गई। इसके लिए आर्य समाज के सुयोग्य विद्वान श्री जीव वर्धन शास्त्री जी, आचार्य श्री दयासागर जी के नेतृत्व मे विभिन्न क्षेत्रों से आये हुए सुयोग्य आचार्य महानुभावों ने पूर्ण पुरुषार्थ कर महत्वपूर्ण योगदान दिया। शिविर की संपूर्ण व्यवस्थाएं दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी और दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी के निर्देशन में सुचारू रूप से गतिशील रही जेबीएम ग्रुप के चैयरमेन एवं दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी का मार्गदर्शन भी लगातार मिलता रहा। इसके अतिरिक्त आर्य समाज रानी बाग के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों का हर प्रकार से सहयोग करना प्रशंसनीय है।

यह ज्ञातव्य है कि दिल्ली जैसे महानगर में एक दो अतिथि भी किसी के यहां दो चार दिन तक ठहर जाएं तो घर की व्यवस्था हिल सी जाती है, लेकिन आर्य समाज परिवार महर्षि दयानंद जी की अमर वाटिका है, इसलिए तो वनवासी अंचलों से आए सैकड़ों बच्चों के इस 10 दिवसीय शिविर में सभी दानी महानुभावों के सहयोग से बहुत सुंदर तरीके से शिविर की संपूर्ण व्यवस्था आदर्श प्रस्तुत करती रही, इसके लिए दयानंद सेवाश्रम संघ की और सभी सहयोगी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद भी ज्ञापित किया गया।

1 जून 2024 को सायं 5 से 8 बजे तक अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली के प्रांगण में इस रचनात्मक शिविर का भव्य समापन एवं दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने की। मुख्य अतिथि, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, अति विशिष्ट अतिथि दिल्ली सभा के प्रधान, श्री धर्मपाल आर्य, श्री प्रकाश आर्य जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत, श्री सत्यानंद आर्य जी, श्री दीपक केड़िया जी, श्री रविन्द्र कुमार शर्मा जी इत्यादि महानुभाव उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ गायत्री, ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों के उच्चारण से प्रारंभ हुआ। वनवासी आर्य कार्यकर्ताओं के रूप में 10 दिन तक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवक-युवतियों ने 'हम करें राष्ट्र आराधन', 'सबसे आगे होंगे हिदुस्तानी', आदि अत्यन्त प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी को भाव विभोर कर दिया।

इसके उपरांत उपस्थित महानुभावों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ किया। मंच पर उपस्थित सभी अतिथियों का अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, श्री प्रकाश आर्य जी, श्री अरोरा जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री दीपक केड़िया जी, श्री रविन्द्र शर्मा जी, श्री सुदर्शन भगत जी इत्यादि महानुभावों का अधिकारियों द्वारा अभिनंदन किया गया। शिविर में प्रशिक्षण देने वाले आचार्य दया सागर, श्री जीववर्धन शास्त्री, श्री राधेश्याम जी, श्री अनिल शास्त्री, श्री ओंकार जी, श्री मनोज जी, सुमेधा वेदालंकार अलंकार, श्री दिलीप शास्त्री, श्री ज्ञान प्रकाश शास्त्री, श्री पवन आर्य, श्री सन्तोष जी इत्यादि महानुभावों का आभार एवं अभिनन्दन किया गया।

- शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

महानुभावों के प्रेरक उद्बोधन

इस अवसर पर शिवरार्थियों को संबोधित करते हुए श्री प्रकाश आर्य जी ने कहा कि अभाव का प्रभाव मनुष्य को मजबूर कर देता है। वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा, संस्कृति और संस्कारों के अभाव का कुछ लोगों ने लाभ उठाया और वहां के भोल-भाले लोगों को भ्रमित करने का काम किया। आर्य समाज द्वारा इन क्षेत्रों में वैदिक विचारो की क्रान्ति से मनुष्य को मनुष्य बनने की शिक्षा दी जा रही है। मानव निर्माण का यह कार्य अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। वैदिक धर्म से ही विश्व का कल्याण संभव है। इस प्रेरक और रचनात्मक शिविर के आयोजको को बधाई और शिवरार्थियों को शुभ कामनाए। इस क्रम में सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों की वास्तविक स्थिति का आंकलन प्रस्तुत करते हुए कहा कि वहां रावण के स्थान पर राम के पुतले को दहन करने की शिक्षा दी जाती है। हम यहां शहरों के मन्दिरों में घंटियां बजाते रहे तो इससे काम चलने बाला नहीं है। अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के संस्थापकों ने इस रहस्य को समझा और वहां वेद और महर्षि दयानंद की शिक्षाओं से क्रान्ति की, आज पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में आर्य समाज के गुरुकुल, विद्यालय, छात्रावास , और बालवाड़ियां चल रही हैं। जहां मानव का निर्माण किया जा रहा है, इसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा 50 बालवाड़ी चलाने का सहयोग दिया गया है, आर्य प्रतिभा विकास और प्रगति प्रोजेक्ट के माध्यम से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ऐतिहासिक कार्य कर रहा है। आर्य समाज द्वारा प्रदान की गयी शिक्षा सेवा के माध्यम से आज 7 आईपीएस अधिकारी प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत हैं।

इस अवसर पर आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के अन्तर्गत उच्च शिक्षा प्राप्त डी. सी.पी. बने श्री सौरभ कुमार ने अपने अनुभव में बताया कि आर्य प्रतिभा विकास संस्थान एक ऐसा अवसर प्रदान करता है जोकि अपने आप में एक नई चेतना और एक नया वातावरण देकर विद्यार्थी को सफलता के द्वार तक पहुंचा देता है। मैं आर्यसमाज के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान से शिक्षण प्राप्त करके दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफसर नियुक्त हुए श्री नरेन्द्र शर्मा ने भी अपने अनुभवों को साझा किया और उपस्थित समस्त कार्यकर्ताओं से आर्यसमाज के विभिन्न प्रकल्पों से लाभ प्राप्त करके समाज को लाभ देने की बात कही।

इस अवसर पर सीआरपीएफ के अधिकारी श्री रविन्द्र कुमार शर्मा जी ने वैचारिक क्रान्ति शिविर के आयोजन की बधाई देते हुए दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा धनश्री, बोकाजान, नागालैण्ड इत्यादि पूर्वोत्तर के क्षेत्रों में किये जा रहे सेवा कार्यों का वर्णन करते हुए कई ऐसे जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत किए जिससे उपस्थित लोगों को ज्ञात हुआ कि इन क्षेत्रों में कार्य करना कितना कठिन है। शर्मा जी ने आर्य समाज के मनोबल और सेवा भाव की प्रशंसा की। श्री दीपक केड़िया जी ने भी अपने उद्बोधन में समाज में बदलाव का कारण शिक्षा को ही बताया। आपने बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम और शिविर को आर्य समाज का अत्यन्त रचानात्मक कदम बताया। पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी के सेक्रेट्री श्री अमरीक सिंह जी ने शिक्षा को सबसे बड़ा यज्ञ बताया और इस यज्ञ में सबको आहुति देने की बात कही।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के वैचारिक क्रान्ति शिविर की प्रशंसा करते हुए कहा कि हजारों लाखों बच्चों के जीवन में परिवर्तन इसी तरह से आता है। आपने कहा कि कोई भी बड़ा परिवर्तन हाथियारों से नहीं विचारों से आता है। महर्षि दयानंद ने विचारों से ही क्रान्ति की थी। विचारों से ही समाज को दिशा दी थी। विचार ही व्यक्ति के जीवन का आधार हैं। आने वाले समय में सार्वदेशिक सभा धर्मान्तरण पर रोक लगाने के लिए और अधिक शक्ति से कार्य करेगी। आपने सभी आयोजकों को बधाई दी और शिवरार्थियों को आशीर्वाद दिया।

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान एवं जेबीएम ग्रुप के चैयरमेन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने 10 दिवसीय शिविर की सफलता के लिए सभी आयोजकों को बधाई देते हुए, बच्चों को अशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि दिल्ली में दशकों के बाद इस भयंकर गर्मी में आप सब उपस्थिति बता रही है कि आर्य समाज का भवष्यि उज्जवल है। आपने एक शेर का उदाहरण देते हुए युवा शक्ति को छत्रपति शिवाजी और गुरु गोविन्द से प्रेरणा लेकर भारत के स्वाभिमान को जाग्रत रखने का संदेश दिया। आपने उपस्थित शिवरार्थियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप सब होनहार है, कर्णधार है, भारत का भविष्य हैं अपने आप को आगे बढ़ाते रहें और कल्याण के पथ पर निरन्तर ऊँचा उठते रहें। आप ने सभी अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि इन सभी युवाओं से सम्पर्क बनाये रखें और इन्हें सांधन सुविधायें देते रहें और दयानंद सेवाश्रम

- जारी पृष्ठ 7 पर

41वें वैचारिक क्रान्ति शिविर में विभिन्न प्रान्तों से पधारे आचार्यगण मंचस्थ अतिथिगणों तथा आर्यसमाज के अधिकारियों के साथ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में गुरुकुल पौंधा, देहरादून में स्वाध्याय एवं योग साधना शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देहरादून में 28 मई से 31 मई 2024 तक चार दिवसीय स्वाध्याय एवं योग साधना शिविर सम्पन्न हुआ। उद्घाटन सत्र में डॉ. धनन्जय ने अनुशासन एवं शिविर दिनचर्या की चार्चा की। चार दिवसीय स्वाध्याय शिविर का विषय ''महर्षि दयानन्द'' लेखक प. इन्द्र विद्यावाचस्पति रहा। शिविर आचार्य डॉ. योगेन्द्र याज्ञिक ने स्वामी जी के जन्म गाँव टंकारा, बचपन का नाम मूल शंकर माता अमृतबाई पिता करसन जी से आरम्भ किया। किशोर अवस्था में शिवरात्रि की घटना, बहन की मृत्यु, चाचा की मृत्यु को जीवन में वैराग्य उत्पन्न करने वाली घटना बताया। गृह त्याग रात्रि में पुलिस को चकमा देना, योग गुरुओं से मिलना, 1860 में प्रज्ञा चक्षु विरजानन्द के पास की कुटिया में पहुंचना, 1869 में काशी शास्त्रार्थ. 1875 में मुम्बई में प्रथम तथा 1877 में लाहौर में दूसरी आर्य समाज की स्थापना एवं 1883 में देह त्याग की घट्नाओं की सुन्दर व रोचक व्याख्या की। आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने बताया कि स्वामी दयानन्द ने आठ गप्पों का विरोध किया यथा- 1. अठारह पुराण, 2. मूर्ति पूजा, 3.शैव/शाक्त , रामानुज आदि सम्प्रदाय, 4. तन्त्रग्रंथ वाममार्गी आदि , 5. भंग शराब आदि नशे की चीजें, 6. स्त्रीगमन, 7. चोरी, 8. छल, अभिमान, झूठ आदि। शिविर में सभी की भागीदारी बनी रहे इस दृष्टि से यथा समय श्री वीरेन्द्र सोलंकी, श्री लोकराम, राजवती पांचाल, राजवती धामा, श्री हरबंस लाल, श्री देवेन्द्र सचदेवा, अनीता शास्त्री, श्री संदीप त्रिवेदी, अनीता शर्मा, अर्चना गन्दगे तथा श्री राम सेवक शास्त्री ने पाठ वाचन किया।

- शेष पृष्ठ 6 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

सुधार की तीसरी दशा

(सन् 1870 से 1875 तक)

गतांक से आगे -

प्रारम्भिक कार्य समाप्त हो जाने पर महाराज ने महर्षि जी से हाथ जोड़कर निवेदन किया कि मूर्तिपूजा में हमारे कुल की सनातन काल से श्रद्धा है, उसके प्रसंग से शास्त्रार्थ के समय आपकी अवज्ञा हो गई थी। आप संन्यासी हैं-आशा है, क्षमा कर देंगे। महर्षि जी ने उत्तर में कहा कि हमारे मन में उस बात का लेश मात्र भी संस्कार नहीं है। महाराज ने विदा करते हुए महर्षि जी की सेवा में उचित भेंट उपस्थित की इस प्रकार यह सुखन्त प्रसंग समाप्त हुआ।

बनारस से महर्षि जी कासगंज गए। वहां आपकी स्थापित की हुई एक पाठशाला थी, जिसमें ब्रह्मचर्य के नियमों के पालन के साथ अष्टाध्यायी महाभाष्य तथा मनुस्मृति आदि का अध्ययन कराया जाता था। कासगंज की पाठशाला का महर्षि जी ने निरीक्षण किया। यहां पर एक घटना हुई, जो देखने में सामान्य थी, परन्तु उससे महर्षि जी की निर्भयता का पुष्ट प्रमाण मिलता है। आप बाजार में जा रहे थे, सामने से एक मस्त मरखना सांड आ रहा था। बाजार के सब लोग इधर-उधर भाग रहे थे, कोई सांड को रोकने का साहस नहीं कर रहा था। महर्षि जी रास्ते से न हटे और चलते ही गए। जब महर्षि जी बहुत पास पहुंचे, तब सांड स्वयं ही रास्ता छोड़कर अलग हो गया। जनता के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। एक भक्त ने पूछा कि महाराज! यदि वह सांड सामने से न हटता तो आप क्या करते? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि सींग से पकड़कर उसे अलग कर देते। महर्षि जी पर शारीरिक भय कोई प्रभाव नहीं कर सकता था। यहां से चलकर महर्षि जी जलेसर, कर्णवास, फर्रुखबाद आदि स्थानों पर भ्रमण करते हुए बनारस गए, और वहां से पूर्व की ओर प्रस्थान किया।

पूर्व की यात्रा में एक बड़ी मनोरंजक घटना हुई। मुंगेर जाते हुए रास्ते में जमालपुर जंक्शन पर कुछ देर तक ठहरना पड़ा। महर्षि जी के शरीर पर केवल कौपीन थी। आप प्लेटफॉर्म पर घूम रहे थे। स्टेशन पर पत्नी सहित एक अंग्रेज इंजीनियर विद्यमान था। नंगा शरीर देखकर इंजीनियर साहब के सभ्यता-सम्बन्धी विचारों पर बड़ा धक्का लगा। उसने झट स्टेशन मास्टर को बुलाकर कहा कि यह नंगा कौन टहल रहा है? इसे इधर-उधर घूमने से बन्द कर दो! स्टेशन मास्टर का अंग्रेज ही ईश्वर था। उसने महर्षि के पास जाकर निवेदन किया कि महाराज! दूसरी ओर चलकर कुर्सी पर आराम कीजिये। मुंगेर की गाड़ी के जाने में अभी देर है। स्वामी जी सब ताड़ गए। आपने स्टेशन मास्टर से कहा कि जिसने तुम्हें हटाने के लिए कहा है उससे कह दो कि हम उस समय के मनुष्य हैं, जब आदम हव्वा नंगे अदनबाग में सैर किया करते थे। स्टेशन मास्टर यह उत्तर सुनकर टल गया। महर्षि जी टहलते रहे। इंजीनियर ने उसे फिर बुलवाया। स्टेशन मास्टर ने साधु को प्लेटफॉर्म से हटाने में असमर्थता प्रकट करते हुए कहा कि यह स्वतन्त्र संन्यासी है। आश्चर्यित होकर अंग्रेज ने नाम पूछा। स्टेशन मास्टर ने नाम बता दिया। साहब यह कहता हुआ कि क्या ये ही प्रसिद्ध सुधारक महर्षि दयानन्द

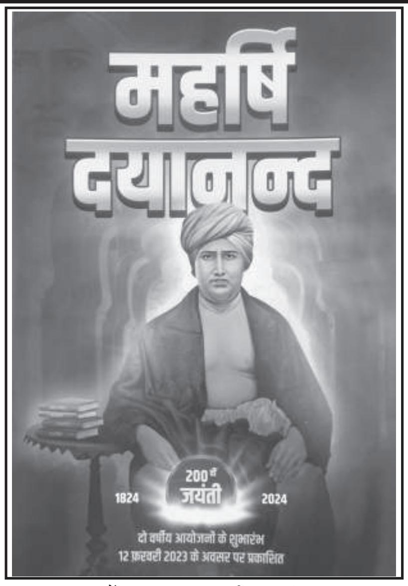

सरस्वती हैं? झट महर्षि जी के पास चला गया और बहुत देर तक बातचीत करता रहा।

- क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Third Stage of Reform

From 1870-1875 A.D.

Continue From Last Issue

Work Reform reached its third stage with the passage of time. The reformer had already planned the work after thinking seriously. But with getting more experience it was possible for Swami Daya Nand to give it practical shape. It should not be thought that after the incident of Kashi Debate there was sudden change in the plan. The field of work was spreading slowly. Due to debate of Kashi Swamiji's fame spread all over the country. The great men of place far away, who were worried to see and understand the bad position of the country, had found light to hope after reading about the incident of debate of Kashi. They were convinced about great reform in the position of the country. Discussion about 'Reformer Daya Nand' started all over.

As the field of his fame started spreading, field of his also spreading. We find increase in field of reform during next 5 years. The type of work also started getting changed. Instead of debates and prachar Karya he started regular meetings and delivered speeches in Sanskrit only, but afterwards he changed it to Hindi, He remained in a coppen every where, but there was a change. He went wearing full clothes everywhere. During this period 'Satyarth Prakash' was also writeen. So, there was a great change in Prachar work in all directions. This change proved to be the source of making reform work more people friendly.

The change was not brought all of sudden. With the spread of field of work, using new methods of work was found useful. During travelling different places, Swamiji met many other reformers. After having discussion with, many new ideas arose in his mind and he these ideas were changed into practical work. The description of the work we are giving now, was the time of deciding way of reform finally. After that we would find Rishi Daya Nand not only a reformer, but the centre of great work. After reaching last stage of reform work, working power of Swamiji changed too. This topic will be disused in next chapters. In this chapter we will mention spreading of field of reform and the methods used for doing the reform of higher stage.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji.To buy online login www.vedicprakashan.com or contact 9540040339

पृष्ठ 5 का शेष

गुरुकुल के वार्षिकोत्सब एवं स्वाध्याय शिविर समापन के अवसर पर श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कर-कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। आपने स्वाध्याय के महत्व को रेखांकित किया और भवष्यि में पौन्धा में ही यथा संभव शिविर लगाने की बात कही। शिविर सहअध्यक्ष सुखवीर सिंह, मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि, स्वामी प्रणवानन्द संस्थापक गुरुकुल पौंधा, डॉ. योगेन्द्र याज्ञिक, डॉ मुकेश आर्य, डॉ. धनन्जय व्यवस्थाक ने सभी शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। स्वामी प्रणवानन्द जी ने इस प्रकल्प को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की विशेष योजना बतााया। सुखवीर सिंह ने सभी को अपनी शुभकमानाए प्रेषित की। डॉ. मुकेश ने श्री विनय आर्य, श्री धर्मपाल आर्य, डॉ. धनन्जय, श्री चन्द्रभूषण सहित गुरुकुल परिवार का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर श्री सतीश चड्डा शिविर अध्यक्ष (महामंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली) का प्रिंटिंग संबंधी व्यवस्थाओं हेतु धन्यवाद किया।

प्रात:कालीन योग एवं साधना की क्रियाएं स्वामी योगेश्वरानन्द एवं श्री कृष्ण योगाचार्य द्वारा करवाई गई। योगेश्वरानन्द जी ने स्वस्थ रहने हेतु संतुलित भोजन व प्राणायाम पर बल दिया। प्रतिदिन लगभग 150 साधकों ने भाग लिया। खुशी की एक बात यह भी रही कि स्वाध्याय सत्र में लगभग 250 महानुभावों ने एक कक्षा में भाग लिया। आ. वेद प्रकाश वैद्य, अनीता शर्मा, देहरादून से, श्री विनोद दधिंची, श्री कुलदीप आर्य उतर प्रदेश से, श्री अनुपम नाथ शिवली नाथ, अगरतला त्रिपुरा से, श्री हरपाल शास्त्री, श्री अशोक कुमार हरियाणा से, जय श्री महाराष्ट्र से, श्री रामेश्वर आर्य, राजस्थान, से उपस्थित रहें।

रात्रिकालीन संत्संग शिविर का एक महत्वपूर्ण भाग था। इसमें आर्य समाज शाहबाद मो.पुर व दिल्ली की महिलाओं जैसे रानी सोंलकी, राजबाला, श्री सन्तोष, सरला पांचाल, शांति सैनी, मूर्ति छिल्लर ममता आदि ने भजन गाए तथा पुरुष वर्ग से आचार्य श्री वेद प्रकाश ने अपने विचार रखे व श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता आदि महानुभावों ने गीत व भजन गाए।

- डॉ. मुकेश आर्य, संयोजक

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का

राष्ट्रीय वीरांगना प्रशिक्षण शिविर

रविवार 16 जून से मंगलवार 25 जून, 2024

स्थान : राजकीय कन्य विद्यालय, गंधरा, सांपला, रोहतक (हरि.)

जानकारी हेतु सम्पर्क करें- ***श्रीमती मृदुला चौहान, संचालिका, 9810702760***

आर्य युवा संस्कार शिविर, पंचकुला
8 से 22 जून (लेवल-1)
7 से 12 जून (लेवल-2)
स्थान सीमित (30 सीट प्रत्येक)
सम्पर्क- ***बृहस्पति आर्य 9990232164***

आर्य युवती संस्कार शिविर, पंचकुला
13 से 17 जून (लेवल-1-2)
स्थान सीमित (30 सीट प्रत्येक)
सम्पर्क- ***श्रीमती शालिनी गुप्ता, 9810580195***

पृष्ठ 3 का शेष

मैं क्या खा सकता हूँ?

लोगों की तुलना में शाकाहारी लोगों की जीवन प्रत्याशा अधिक होती है। शोध से पता चलता है कि मांस का सेवन कम करने से आपका जीवनकाल 3.6 वर्ष तक बढ़ सकता है। इसी रिपोर्ट से पता चला है कि पौधों पर आधारित आहार का सेवन करने वाले लोगों की समूह वालों में 70 वर्ष की आयु से अधिक जीवित रहने की संभावना भी अधिक देखी गई।

अध्ययनों से पता चलता है कि शाकाहारी चीजों यानि पौधों से प्राप्त खाद्य पदार्थों के सेवन की आदत शरीर के लिए आवश्यक पोषक तत्त्वों की आसानी से प्राप्ति में सहायक होती है, साथ ही इससे कोलेस्ट्रॉल और ब्लड शुगर जैसी समस्याओं के बढ़ने का जोखिम भी कम होता है।

आहार विशेषज्ञ कहते हैं, शाकाहारी आहार का सेवन रक्त शर्करा को नियंत्रित रखने, हृदय स्वास्थ्य को बेहतर रखने और वजन कम करने में भी मददगार है। शाकाहारी या मांसाहारी आहार, शरीर को स्वस्थ रखने में किस प्रकार की चीजों को अधिक फायदेमंद माना जाता है, यह लंबे समय से चर्चा का विषय रही है। कई अध्ययनों के निष्कर्ष में शोधकर्ताओं ने पाया कि शाकाहारी भोजन में अन्य खाने के पैटर्न की तुलना में कम कैलोरी, सेचुरेटेड फैट और कोलेस्ट्रॉल के स्तर में कमी होती है। इसके अलावा इस तरह के आहार में फाइबर, पोटेशियम और विटामिन-सी की भी अधिकता होती है। शाकाहारी का वजन, मांस खाने वालों की तुलना में कम होता है जिससे उनमें कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा भी कम होता है। ऐसे में शाकाहारी आहार को अधिक स्वस्थ माना जाता है।

समाधान— आज से ही अपने बच्चों को एक चीज जरूर सिखाएं कि हम मनुष्य हैं और इस नाते प्रकृति में हमारी जिम्मेदारी सबसे अधिक है। कुछ खाने से पहले अपनी आत्मा की आवाज जरूर सुनें।

– नॉनवेज को बंद करें या आहिस्ता-आहिस्ता इसका सेवन कम करते जाएं।

– फास्टफूड को भी सीमित करें, भयंकर विष का प्रभाव रहता है। पिज्जा, बर्गर, पेस्ट्री, चॉकलेट और केक जैसी चीजों से न सिर्फ बच्चे की हेल्थ खराब होती है बल्कि शारीरिक और मानसिक विकास पर भी असर पड़ता है। ऐसे बच्चों की इम्यूनिटी भी काफी कमजोर हो जाती है। जिसकी वजह से बच्चों में संक्रमण और एलर्जी का खतरा बहुत ज्यादा बढ़ जाता है।

– भारतीय पृष्ठभूमि पर बने तैयार खाने की आदत बचपन से डाले। बच्चे को सही विकास के लिए डाइट में कुछ शुद्ध शाकाहारी व्यंजन जरूर शामिल करने चाहिए। बच्चों का पालन-पोषण शाकाहार भोजन दूध-दही के साथ करें। ध्यान रखें बच्चे आज जैसा भोजन करेंगे कल ऐसा ही परिवार, समाज और राष्ट्र का भविष्य होगा।

– इसे चर्चा का विषय बनाये, परिवार में चर्चा करें, स्कूलों में डिबेट करें खुद अपनी खान-पान की आदत बदलें।

– मेरा शरीर 100 वर्ष तक जीने के लिए है इससे कम इसे जीना नहीं और 100 वर्ष भी पूर्ण स्वस्थ रहकर जीना है किसी के ऊपर निर्भर रहकर नहीं, आओ बिना किसी को दुःख दिए अपना भोजन शुद्ध शाकाहार बनाये। ठीक इसी तरह, साहित्य में नोवेल पुरस्कार विजेता जार्ज बर्नार्ड शॉ कहते हैं, हम मांस खाने वाले वे चलती-फिरती कब्रें हैं, जिनमें वध किए जानवरों की लाशें दफन की गई हैं, जिन्हें हमारे स्वाद और चाव के लिए मारा गया है।

– गोकरुणानिधि पुस्तक जरूर पढ़ें।

– आशा है आप अपने कुछ देर के स्वाद के लिए किसी की हत्या करने के पाप में भागीदार नहीं बनेंगे।

– सम्पादक

पृष्ठ 2 का शेष

दूसरा पिछले दिनों सभी न्यूज़ पेपर्स की खबर थी कि एनटीपीसी और दादरी क्षेत्र के गांवों में रहने वाले दो जातियों के युवकों के बीच सोशल मीडिया पर "वीडियो वॉर" छिड़ गई है। इंस्टाग्राम, फेसबुक, ट्वीटर और व्हाट्सएप पर जमकर गाली-गलौज चल रही है। मामला तूल पकड़ता जा रहा है। जानकारी मिलने के बाद ग्रेटर नोएडा पुलिस अलर्ट हो गई है। डीसीपी ने दादरी, जारचा और बादलपुर पुलिस को नजर रखने का आदेश दिया है। दूसरी ओर पुलिस और लोकल इंटेलिजेंस इस मामले में शामिल युवकों की पहचान करने में जुट गए हैं।

खबर थी कि दो कुछ युवकों ने इंस्टाग्राम लाइव पर एक-दूसरे को गालियां दीं। फिर यह रिकॉर्डेड वीडियो सोशल मिडिया पर शेयर किए गए। जिसमें एक जाति विशेष को गालियां दी गई हैं।

अब इस वीडियो के जवाब में दूसरी जाति के युवकों ने एक वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किया है। पूरे इलाके में जातीय तनाव पैदा हो गया है। टकराव की संभावनाएं बढ़ रही हैं। अब दोनों जाति के युवक एक-दूसरे की जाति के लोगों के खिलाफ अभद्र भाषा में वीडियो बनाकर वायरल कर रहे हैं। कुछ लोगों ने कुछ लोगों ने पुलिस को ट्वीट करके कार्यवाही की मांग की किन्तु पुलिस ने मामला साइबर सेल को भेजकर पल्ला झाड़ लिया। साइबर सेल ने इस मामले में कार्यवा नहीं की। जिसके चलते दूसरी जाति के लोग सामने आ गए। एक बड़ा टकराव होते-होते बचा।

इससे पहले ग्रेटर नोएडा के अच्छेजा गांव और गाजियाबाद के बम्हैटा गांव के युवक ने एक-दूसरे की जाति के बारे में अभद्र भाषा में वीडियो वायरल की थी। जिसके बाद दोनों जातियों के लोग भिड़ गए थे और मारपीट भी हुई थी। पुलिस को मामला संभालना मुश्किल पड़ गया था। इसी तरह राजनीतिक और सामाजिक लोगों ने सामने आकर पंचायत करके मामला निपटाया था। करीब एक साल पहले बागपत में भी दो जातियों के युवक टिक-टॉक पर इसी तरह वीडियो बनाकर डाल रहे थे।

केवल जातीय टकराव तक सिमित नहीं बल्कि जब कोई खिलाडी देश के लिए पदक लाता है। या को होनहार छात्र अच्छे अंकों से पास होता है। यूपीएससी की परीक्षा में पास होने वाले अभ्यार्थी तक की जाति निकालकर सोशल मीडिया पर ट्रेंड होते हैं। थोड़े समय पहले की ही बात है, जब गूगल पर बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु की जाति खूब टटोली गई थी। उस समय इसकी निन्दा हुई थी।

इसके बाद असम की एक लड़की ने हिमा दास ने एक महीने के भीतर ही पांच स्वर्ण पदक जीत लिए थे। किन्तु लोग उनकी जाति में भी दिलचस्पी दिखा रहे थे और गूगल में उनकी जाति सर्च कर रहे थे। फिर एक पोस्ट लिखा था कि मूलनिवासी ही कोच है। मूलनिवासी ही धावक है। आप समझ जाइए सफलता इनकी ईमानदारी की वजह से मिली है। अन्यथा मनुवादी तो हर जगह चोर ठगी करते हैं।

इन पोस्टों से एहसास हुआ कि जिसके पास जैसा चश्मा है, वह वैसा भारत देख रहा है और जिसके पास जिस रंग की स्याही है, वह वैसा ही भारत लिख रहा है। लगता है आज जिस सबसे गंभीर बीमारी से भारतीय जूझ रहे हैं, वह मधुमेह या कैंसर नहीं बल्कि जातीय पहचान, गर्व और शर्मिन्दगी की बीमारी है। जिसके निदान की कोई दवा, कोई टीका अभी दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रही है। यह तय है कि आने वाले समय में यह बीमारी कम होने की बजाय और ज़्यादा समाज में दिखा देगी।

हालाँकि सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव से आशा जागती है कि जातिवाद भारत में खत्म होकर रहेगा, लेकिन कई लोगों के लिए जाति सुविधा है। जाति उनके लिए राजनीति का इंधन है। जाति उनकी समस्या नहीं, विशेषाधिकार है। दूसरी तरफ ऐसे लोग हैं, जिनके लिए जाति-सम्मान की बात नहीं, लाज की बात है। इसीलिए अनेक समुदायों के लोग लगातार आंदोलन करते रहते हैं और वे आंदोलन इसलिए करते हैं कि उनकी जाति कोई 'पिछड़ी जाति' माना जाए। आम बोलचाल की भाषा में एक मुहावरा चल निकला है, जो भारत की राजनीति को दर्शाता है- 'जहां जात, वहां करामात'। वोट की राजनीति में यह सब तो होना ही है। अब इस कीचड़ के छींटे सोशल मीडिया पर भी नजर आएं, तो अचरज कैसा? *– सम्पादक*

पृष्ठ 5 का शेष

10 दिवसीय वैचारिक क्रान्ति ...

संघ के कार्यों को आगे बढ़ाते रहें। आपने आर्यवीर दल के एक गीत की प्रेरक पंक्ति के साथ अपने उद्बोधन को विराम देते हुए कहा कि- जो देश के काम ना आये वह जीवन है बेकार, आर्यों हो जाओं तैयार, आर्यो हो जाओं तैयार।

शिवरार्थियों के अनुभव

इस शिविर में भाग लेने वाले शिवरार्थियों ने अपने अनुभव प्रस्तुत करते हुए आर्य समाज के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया। इसक्रम में बिरसा मुण्डा की जन्म भूमि झारखण्ड से पधारी भूमिका जी ने बताया कि इससे पहले मैं वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों से अनजान थी। यहां आकर मैंने संध्या हवन सीखा, यज्ञोपवीत धारण किया और जीवन जीने की कला सीखी। मैं अपने गुरुजनों के प्रति तथा अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। मध्य प्रदेश से आयी कोमल जी ने भी अपने अनुभव बताते हुये कहा कि शिविर का बतावरण इतना प्रेरक और आकर्षक सिद्ध हुआ कि 10 दिन कब बीत गये पता ही नहीं चला। आपने कहा कि 17 वर्ष हो गये मुझे शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते हुए लेकिन आज तक वेद और यज्ञ के बारे में मुझे पता ही नहीं था । यहां आकर जो सीखा है अब उसे में आगे जाकर बाटूंगी। असम से काजल जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए शिविर की व्यवस्थाओं की प्रशंसा की और अपने जीवन में एक नये बदलाव की बात कही। इसी तरह मध्य प्रदेश के झाबूआ से आये हुए एक शिवरार्थी ने विस्तार से ढोंग पाखण्ड और अन्धविश्वास का हवाला देते हुए कहा कि इससे पहले मेरे मन में उठने वाले प्रश्नों का कहीं जबाव नहीं मिला था। यहां आकर मेरी समस्याओं का समाधान हुआ और मुझे पता चला कि हम सब ईश्वर की सन्तान हैं और वेद ईश्वर की वाणी हैं। वेद को पढ़कर हर तरह की समस्याए दूर हो जाती हैं।

सभी आचार्यो के देखरेख में दिनांक 2 जून 2024 को सभी विद्यार्थियों को दिल्ली के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों में भ्रमण करवाया गया जिससे शिवरार्थी अति प्रसन्न हुए। इस शिविर के सूत्रधार श्री जोगिन्द्र खटटर जी-महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, श्री आचार्य दया सागर जी मुख्य शिविर संयोजक, श्री जीववर्धन शास्त्री जी शिविर संयोजक, श्री विनय आर्य जी, महामंत्री आदि के गरिमामय संयोजन में 41वां वनवासी वैचारिक क्रांति शिविर अत्यंत सफल रहा। आर्य समाज रानी बाग के समस्त सदस्य एवं आर्य गुरुकुल रानी बाग के समस्त कार्यकर्ता श्री सुनील शास्त्री, श्री किशोर शर्मा, सुषमा चावला, श्री संजय चौधरी, श्री सुनील कटारा आदि का विशेष योगदान रहा। *– आचार्य विश्वमित्रार्य*

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज राजनगर-2
पालम कालोनी, नई दिल्ली-45

प्रधान : श्री धर्मेन्द्र आर्य
मन्त्री : श्री रतन सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री प्रदीप शर्मा

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 3 जून, 2024 से रविवार 9 जून, 2024
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 06-07-08/06/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 05, जून, 2024

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह